मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

मज़दूर जब भी जागा है, इतिहास ने करवट बदली है	2
जघन्य अपराधों में शामिल अपराधियों को सजा मिलने के हों इंतजाम	4
एक चुनौती है गरीब किसान-मजदूर की आत्महत्या	5
घातक हो सकता है एयरपोर्ट से सीआईएसएफ को हटाना	6
शिक्षा के नाम पर हवाई गोले छोड़ते पीएम मोदी	8

वर्ष 36 | अंक 44 | फरीदाबाद | 11-17 सितम्बर 2022 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

मरीजों की संख्या में तीव्र बढोतरी, स्टाफ़ की भारी कमी

ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल का गुब्बारा फटने की ओर

डीन ने दिया इस्तीफे का नोटिस

फ़रीदाबाद (म.मो.) करो तो बहुत काम है, नहीं तो राम-राम है। एनएच तीन स्थित ईएसआई अस्पताल को जब हरियाणा राज्य सरकार चलाती थी तो कभी 1200 से अधिक ओपीडी नहीं हुई थी और 150 से अधिक मरीज़ भर्ती नहीं थे। आज उसी जगह 4500 की ओपीडी व 750 मरीज़ वार्डों में भर्ती हैं।

इस दौरान कोई मज़दूरों की संख्या नहीं बढ गई है बल्कि कुछ न कुछ घटी जरूर है। इसके बावजूद अस्पताल में मरीज़ों की बढ़ती संख्या का एक मात्र कारण मौजूदा अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं में बढोतरी है। अपने वेतन का साढे छह प्रतिशत ईएसआई को देने के बावजूद भी जो मज़दूर ईएसआई अस्पताल में झांकना तक पसंद नहीं करते थे, अब अधिक से अधिक ईएसआई कवर्ड होकर इसकी चिकित्सा सेवायें प्राप्त करना चाहते हैं। यहां उपलब्ध सेवाओं के लिये न केवल गुड़गाव, दिल्ली व अन्य क्षेत्रों से भी मज़दूर यहां आने लगे हैं।

विदित है कि यह अस्पताल केवल 510 बिस्तरों वाला है, इसके बावजूद यहां औसतन 750 मरीज़ दाखिल मिलते हैं। इसके लिये वार्डों में अतिरिक्त बेड लगाये जा रहे हैं। करीब 150 बेड का एक अतिरिक्त वार्ड भी तैयार किया जा रहा है। ओपीडी की क्षमता भी 2000 से कम ही आंकी गई थी जो दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। काम करने के

डॉ. असीम दास

जुनून में यहां के डीन डॉ. असीम दास तथा उनकी जुनूनी फेकल्टी ने मज़दूरों की भलाई के लिये हृदय रोग, कैंसर, न्यूरो सर्जरी तथा अन्य सुपर स्पेशलिटी सेवायें भी शुरू कर दी। जाहिर है इससे मज़दूर अधिक लाभान्वित होने लगे और परिणामस्वरूप अस्पताल का कार्य-भार इसकी क्षमता से अत्यधिक बढ़ने लगा। कहने की बात नहीं जब किसी गुब्बारे में हवा भरते ही जायेंगे तो अंत में उसे फटना ही है।

किसी भी अस्पताल में कितना स्टाफ़ और वह भी किस-किस कैटेगिरी का कितना तैनात किया जायेगा, इसके बाबत ईएसआई कार्पोरेशन की मैनूअल (किताब) में बड़ा स्पष्ट लिखा हुआ है। इसके आंकड़ों को दोहराने की बजाय, सुधी पाठक केवल इतना समझ लें कि मौजूदा तैनाती 300 बिस्तरों वाले तथा 1500 ओपीडी वाले अस्पताल के हिसाब से ही है। यानी कि जिस दिन से 510 बेड का यह अस्पताल चालू हुआ था उस दिन भी यहां स्टाफ़ की तैनाती आधी ही थी। उसके बावजूद जिस तरह से अस्पताल की सेवाओं का विस्तार हो रहा है और मरीज़ों की संख्या बढ़ती ही जा रही है, उससे समस्या का विकराल होना तय है।

इसका मूल कारण नई दिल्ली स्थित कॉर्पोरेशन के 'मूर्खालय' में बैठे निकम्मे उच्चाधिकारी हैं। जहां एक ओर अस्पताल में कार्यरत कर्मठ फेकल्टी एवं अन्य स्टाफ़ मज़दूरों को बेहतरीन एवं अधिकतम सेवायें उपलब्ध कराने में प्रयासरत हैं वहीं 'मूर्खालय' में बैठे निकम्मे उच्चाधिकारी केवल अस्पताल की राह में रोड़े अटकाने की नई-नई तरकीबें निकालने में जुटे रहते हैं। जब कोई तरकीब न मिले तो फ़ाइल को ही ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता है।

जिस दिन से यह संस्थान शुरू हुआ है उसी दिन से लगातार अस्पताल की ओर से निगम को बार-बार स्टाफ़ की कमी के बारे में अवगत कराया जा रहा है, परन्तु उनकी मोटी खाल पर कोई खास असर होता नजर नहीं आ रहा है। यहां 123 क्लर्कों की जगह मात्र 30 क्लर्क ही तैनात हैं।

जाहिर है कि ऐसे में डॉक्टरों को डॉक्टरी करने की बजाय क्लर्की भी करनी पड़ती है। यानी कि दो लाख रुपये के डॉक्टर से 30000 की क्लर्की कराई जा रही है। बीते करीब तीन माह से 491 असिस्टेंट प्रोफेसरों के लिये 3000 तथा 115 एसोसिएट प्रोफेसरों के लिये 1000 आवेदन सेक्टर 16 स्थित कॉर्पोरेशन के क्षेत्रीय कार्यालय में पड़े धूल फांक रहे हैं। जबकि चयनित होकर नियुक्त होने वाले इन डॉक्टरों की यहां सख्त जरूरत है। जरूरत जिनको है होती रहेगी, कॉर्पोरेशन अधिकारियों को इसकी क्या चिन्ता है? इसके अलावा बीते 6 साल से प्रोफेसर पद के लिये कोई आवेदन नहीं मांगे गये। इन पदों के लिये सेवा निवृत **शेष पेज तीन पर**

संघ के दलाल करें संघी 'मितरों' को भी हलाल

शिकार करने चले थे यूनिवर्सिटी का, खुद ही शिकार हो गये

दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर तरुण गर्ग व प्रिंसिपल मंजुला दास को वाइस चांसलर बनाने के नाम पर ठगा

फ़रीदाबाद (म.मो.) थाना सेक्टर 31 में सत्यवती कॉलेज दिल्ली के प्रोफेसर तरुण कुमार गर्ग ने पानीपत निवासी किसी नरेन्द्र चौधरी के विरुद्ध धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कराया है। शिकायत में कहा गया है कि नरेन्द्र ने उन्हें, 2019 में अपनी पार्टी की सरकार आने पर किसी विश्वविद्यालय का वाइसचांसलर बनवाने के नाम पर 37 लाख रुपये ठग लिये। गर्ग के मुताबिक वह कुल 40 लाख दे चुका था लेकिन नरेन्द्र अभी 10 लाख और मांग रहा था। जवाब में गर्ग ने कहा कि कुलपति बनने के बाद वह 10 लाख भी दे देगा।

सरकार बनने के बावजूद बहुत दिन तक टाल-मटोल करने के बाद जब गर्ग को कुछ मिलता नजर न आया तो उसने अपने पैसे वापस मांगने शुरू किये। तीन लाख तो वापिस मिल गये, बकाये के 37 लाख लौटाने से इनकार कर दिया तो प्रो. गर्ग को पुलिस की शरण में आना पड़ा।

गणित के प्रोफेसर तरूण गर्ग सैक्टर 30 में सपना कोचिंग सेंटर चलाते हैं अधिक मुनाफे के लिए यूनिवर्सिटी को भी कोचिंग सेंटर बनाने की तमन्ना पाले हुए हैं।

'मज़दूर मोर्चा' ने पाया कि प्रो. गर्ग पुराने संघी हैं और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के माध्यम से नेतागिरी करते हुए प्रोफेसर हो गये थे। संघ द्वारा मोटी रकमें लेकर बड़ी तैनातियां देने के तरीके से भली-भांति परिचित रहे हैं। यह तो इत्तेफाक है कि उनका बिचोलिया खुद ही सारा माल डकार गया। यह भी गौरतलब है कि गर्ग ने 10 लाख रुपये वीसी पद पर नियुक्ति होने के बाद देने की बात कही थी। समझा जा सकता है कि नियुक्ति के बाद तो खुली लूट गर्ग ने मचानी ही थी।

इसके अलावा **'मज़दूर मोर्चा'** के पास तीन अन्य ऐसे लोगों की जानकारी है कि जिन्हें मोटी रकमों के एवज में संघ द्वारा उच्च नियुक्ति दिलाये जाने की बात थी। इनमें से एक एमडीयू रोहतक के प्रोफेसर तथा दूसरे एचएयू हिसार के प्रोफेसर रहे हैं, जिन्हें 50-50 लाख रुपये लेकर संघ मुख्यालय नागपुर ले जाकर वहां से वाइसचांसलर पद का नियुक्ति पत्र दिलाने की बात कही गई थी। परन्तु वे दोनो तो बिल्कुल फक्कड़ थे इसलिये बात नहीं बनी। तीसरे सज्जन गुड़गांव सिविल अस्पताल से सेवा निवृत होने वाले एक

प्रिंसिपल मंजुला दास

अधिकारी थे। जिनसे छह महीने का वेतन संघ के नाम पर सेवा विस्तार के लिये अग्रिम मांगा गया। कुछ सोच-विचार कर अधिकारी ने इन्कार कर दिया।

समाचार लिखते-लिखते जानकार सूत्रों से पता चला है कि सत्यवती कॉलेज की प्रिंसिपल मंजुला दास भी वाइसचांसलर बनने के चक्कर में अच्छी-खासी रकम उसी नरेन्द्र चौधरी को दे चुकी हैं। दरअसल नरेन्द्र की शुरुआती मुलाकात तो प्रिंसिपल से ही थी और इन्हीं के माध्यम से वह प्रो. तरुण गर्ग तक पहुंचा था।

कानूनन रिश्वत लेना व देना दोनों बराबर के जुर्म हैं। इस मामले में उक्त दोनों उच्च शिक्षित एवं पदस्थ लोगों की ऐसी कोई मजबूरी नहीं थी जो वे इतनी मोटी-मोटी रिश्वतें दे रहे थे। वे तो केवल इस रिश्वत को निवेश करके अपने लिये मोटी लूट कमाई का साधन हथियाने की जुगत में थे, लिहाजा रिश्वत देने वालों के विरुद्ध भी मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिये।

पुलिस सूत्रों से पता चला है कि बहादुरगढ़ पुलिस की मदद से आरोपित नरेन्द्र चौधरी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

देशभक्ति, देशहित एवं राष्ट्रवाद के नाम पर ठगीमार ये संघी लोग जब इस तरह से नियुक्तियां बेचेंगे तो नियुक्त होने वाले खुल कर भ्रष्टाचार नहीं करेंगे तो क्या घर से पैसा लुटायेंगे?